खड़ीबोली की कविता का संक्षिप्त परिचय

श्रीयुत ··

आपको हिन्दी-साहित्य की उन्नति के लिये एक प्रयत्न-शील साहित्य-कार समझकर यह पुस्तक आपकी सेवा में भेजी जाती है। इसमें हिन्दी-कविता की वर्तमान प्रगति पर मैंने अपने निजी विचार, निष्पक्ष भाव से, प्रकट किये हैं। संभव है, मेरी अनेक बातों से आप सहमत न हों, पर हिन्दी-कविता का विकास जिस रूप में हो रहा है, उसपर आपके भी विचार जानने की उत्सुकता समस्त नवयुवक कवियों को होगी, जिनको कविता का वास्तविक स्वरूप जानने और अपने मार्ग में आपके विचारों से प्रकाश पाने की आवश्यकता है। अतएव कृपाकर आप अपने विचार प्रकाशित करने का मेरा यह निमंत्रण स्वीकार करें।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना मैं आवश्यक समझता हूँ कि अपने विचार मैंने बिलकुल स्वतन्त्र होकर प्रकट किये हैं। मैं किसी दल-विशेष का व्यक्ति नहीं, न किसी कवि से मेरा मनोमालिन्य ही है, और न किसी कवि के साथ अपनी [illegible]क्तिगत मित्रता, उसकी आयु और उसकी लोक-मान्यता ही के भाव को अपनी विचार-धारा में मैंने बाधक होने दिया है। मेरे सामने कवियों की केवल कृतियाँ थीं; और मैंने उन्हीं पर [illegible] है।

निवेदक,

रामनरेश त्रिपाठी